‘लर्निंग गारण्टी प्रोग्राम’ से जो सीखा

_f"kds'k



लर्निंग गारण्टी प्रोग्राम (एल.जी.पी.)[1] एक बड़े पैमाने का विद्यार्थी आकलन-आधारित कार्यक्रम था जो अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा अवधारणात्मक आधार पर निर्मित किया गया और 2003 से 2008 के बीच 5 राज्यों में लागू किया गया। इस कार्यक्रम को पाँच साल से ज्यादा समय तक देश के अलग-अलग हिस्सों में लागू करने से शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर बहुमूल्य अन्तर्दृष्टियाँ प्राप्त हुईं क्योंकि इस कार्यक्रम में सीखने को केवल बड़े पैमाने की तस्वीर हासिल करने तक ही सीमित नहीं रखा गया था। इसलिए, बड़े पैमाने के आकलनों से जो सीख मिलने की अपेक्षा की जाती है उससे कहीं गहरी सीख यहाँ हासिल हुई। बड़े पैमाने के आकलनों की कई तरह से आलोचनाएँ की जाती हैं जिनमें इसकी योगात्मक प्रकृति से लेकर विद्यार्थी के सीखने को सुधारने में योगदान देने में इसकी प्रभावहीनता तक इस सिद्धान्त को पूरी तरह से खारिज कर दिया जाता है। दिलचस्प बात है कि आकलन के प्रारूप के भीतर कुछ नूतन प्रयोग और शोध प्रक्रियाओं को शामिल करके, एल.जी.पी. न केवल बड़े पैमाने के आकलनों के संकटों से बच गया, बल्कि इस तरह के आकलनों से पारम्परिक रूप से जो अपेक्षाएँ की जाती हैं उनसे कहीं अधिक को पूरी करने में सफल रहा।

एल.जी.पी. का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था ऐसे उत्कृष्ट स्कूलों की पहचान करना और उन्हें पुरस्कृत करना जो सीखने की अपेक्षित योग्यताओं को हासिल कर रहे थे। और इस कार्यक्रम ने इस वैचारिक उद्देश्य में दो सम्बन्धित स्थितियों को समाविष्ट किया, यानी योगात्मक आकलन के आँकड़ों का इस्तेमाल निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए करना :

अ. रचनात्मक उद्देश्यों के लिए (शिक्षण प्रक्रियाओं और कक्षाओं में होने वाले अध्ययन-अध्यापन में सुधार करना), और

ब. सिर्फ फीडबैक देना ही नहीं बल्कि शिक्षकों को फीड-फॉरवर्ड (भविष्य में फीडबैक पाने के लिए शिक्षकों को दी जाने वाली फीडबैक-पूर्व जानकारी) भी देना।

‘इसलिए एल.जी.पी. आकलन को योगात्मक माना जा सकता है, पर वह सिर्फ सीखने का आकलन होने तक ही सीमित नहीं है क्योंकि ऐसे आकलन से मिलने वाला फीडबैक, स्कूल के अपने स्तर पर और पूरी व्यवस्था के स्तर पर भी, कक्षा में होने वाले शिक्षण में सुधारों की शुरुआत करने की प्रक्रिया की महत्त्वपूर्ण कड़ी होता है। इसे ऐसे समझ सकते हैं, यदि हम साल के अन्त में तीसरी कक्षा के विद्यार्थियों की परीक्षा ले रहे हैं, तो उनके परिणाम तीसरी कक्षा को पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए भी फीडबैक होंगे तथा चौथी कक्षा को पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए भी।’ फीड-फॉरवर्ड के पीछे का तर्क यह धारणा है कि योग्यताओं में निरन्तरता होती है और इसलिए शिक्षकों को विद्यार्थियों के सामने किसी खास योग्यता को हासिल करने में सामान्य रूप से आने वाली समस्याओं की गहरी समझ हासिल होगी। आकलन की प्रक्रिया में फीड-फॉरवर्ड की व्यवस्था को शामिल करने के द्वारा पहले की स्थिति में किए गए बदलाव से इस आलोचना को दूर करने में मदद मिलती है कि शिक्षक वरीयता के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बड़े पैमाने के योगात्मक आकलनों को अनुपयोगी पाते हैं क्योंकि इसे अकादमिक वर्ष के अन्त में किया जाता है जब सम्बन्धित विद्यार्थी दूसरी कक्षा में जा रहे होते हैं। दरअसल, इस कार्यक्रम में इस मुद्दे को भी अलग ढंग से सुलझाया गया, स्कूलों को यह मौका दिया गया कि वे उस वर्ष के उस

समय का चुनाव कर सकते थे जब वे अपने स्कूल में आकलन करवाना चाहते हों। और इससे उभरने वाली किसी पेचीदगी को दुरुस्त करने के लिए आकलनों की रूपरेखा इस प्रकार रची गई थी कि बजाय इस ग्रेड/वर्ष के, विद्यार्थियों की पिछले वर्ष की योग्यताओं की परीक्षा ली जाना थी। इसलिए यदि चौथी कक्षा का आकलन किया जा रहा होता था तो विद्यार्थी तीसरी कक्षा की योग्यताओं से सम्बन्धित प्रश्नों के जवाब देते थे। चूँकि परीक्षा उपकरण में ऐसे सवालों और चुनौतियों को शामिल किया गया था जो योग्यताओं पर आधारित थे न कि किसी पाठ्यपुस्तक की विशेष पाठ्यवस्तु पर। इसीलिए इसमें किसी पूर्वाग्रह की जगह ही नहीं थी। इससे बड़े पैमाने के आकलनों की इस आलोचना को दूर करने में भी मदद मिली कि कथित रूप से इनके कारण परीक्षाओं के हिसाब से पढ़ाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है।

एल.जी.पी. का अनुभव यह दिखाता है कि आधारभूत ढाँचे में कमी, शिक्षकों की पर्याप्त संख्या न होना और किसी स्कूल के बुनियादी स्वास्थ्य स्तरों को तय करने वाली अन्य जरूरतों जैसी इसी तरह की चुनौतियों के बावजूद ऐसे कुछ स्कूल हैं जो विद्यार्थी के सीखने के अच्छे नतीजों को सुनिश्चित करने का बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। एक समान चुनौतियों वाले स्कूलों में विद्यार्थियों के सीखने के नतीजों में ऐसे अन्तर होने के पीछे के कारणों को समझना (उन कारकों और प्रक्रियाओं का दस्तावेजीकरण करके जिनकी वजह से ये स्कूल अच्छा प्रदर्शन करने में सफल रहे) इस आकलन कार्यक्रम की अगली गतिविधि थी। इस प्रकार, एल.जी.पी. न सिर्फ बड़े पैमाने के आकलन पर आधारित एक कार्यक्रम था, बल्कि ऐसा कार्यक्रम था जिसे छोटे और बड़े पैमाने के शोध अध्ययनों का भी सहारा मिला था जिसके परिणामस्वरूप जबरदस्त जानकारी प्राप्त हुई।

'किसी स्कूल का प्रदर्शन कई सामाजिक, आर्थिक, आधारभूत ढाँचे तथा पढ़ाई की गुणवत्ता सम्बन्धी मुद्दों के पेचीदा पारस्परिक प्रभावों का परिणाम होता है; एक दृष्टिकोण सुझाता है कि बच्चों के स्कूल छोड़ देने और परिणामस्वरूप सीखने के कमजोर स्तरों का प्रदर्शन करने के लिए सामाजिक-आर्थिक कारक जैसे जाति, परिवार की आय और पेशा, माता-पिता की शिक्षा के स्तर आदि, मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। जबकि दूसरा दृष्टिकोण सुझाता है कि सामाजिक-आर्थिक मुद्दों से प्रभावित हुए बिना, स्कूल में बच्चों की उपस्थिति (और परिणामस्वरूप सीखने की उपलब्धियों) को निर्धारित करने वाला प्रमुख कारक शिक्षण की गुणवत्ता है।' इसलिए, किसी स्कूल की तुलनात्मक सफलता या असफलता का कारण दो पृथक पहलुओं को माना जा सकता है - एक तरफ सामाजिक-आर्थिक, जनसांख्यिकीय और पर्यावरण सम्बन्धी संकेतक और दूसरी तरफ स्कूल के भीतर की प्रक्रियाएँ। एल.जी.पी. पर आधारित शोध अध्ययनों ने ऐसे जानकारियाँ प्रदान की हैं जो आमतौर पर माने जाने वाले दृष्टिकोणों को खारिज करती हैं जबकि कुछ दूसरे दृष्टिकोणों को बल प्रदान करती हैं। ये जानकारियाँ दिखाती हैं कि जब स्कूलों के विद्यार्थियों के सीखने के नतीजों की बात आती है तो स्कूल की बुनियादी सुविधाओं और शिक्षकों की विशेषताओं तथा उपलब्धियों की कोई बहुत बड़ी भूमिका नहीं प्रतीत होती। इसीलिए वे सफलता हासिल करने के लिए वांछनीय पहलू तो प्रतीत होते हैं पर अत्यावश्यक नहीं हैं।

वे स्कूल, जो सीखने के नतीजों में अच्छा प्रदर्शन करते हैं बनाम वे स्कूल जो ऐसा नहीं करते, इनमें भेद करने वाले प्रमुख कारक स्कूल प्रबन्धन और प्रक्रियाओं से जुड़े पहलू प्रतीत होते हैं। स्कूल जो अच्छा करते हैं अनुशासन, प्रतिबद्धता और शिक्षक भागीदारी के बहुत ऊँचे स्तरों का प्रदर्शन करते हैं। इसके प्रगट रूप में अर्थ हैं प्रधान शिक्षक और बाकी शिक्षकों की उपस्थिति, अच्छे रिकार्डों को बनाए रखना, स्कूल में अध्ययन-अध्यापन से जुड़ी अच्छी सामग्री का होना, स्कूल की स्वच्छता और अच्छा रूप। ऐसा लगता है कि इन स्कूलों के शिक्षकों ने वह अतिरिक्त प्रयास किया है जिसके तहत उन्होंने बच्चों के साथ अतिरिक्त समय बिताया है (कभी-कभी तो छुट्टियों पर भी), उन्हें अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित किया, कमजोर बच्चों की पहचान की और सुधारात्मक शिक्षण के माध्यम से उनकी तरफ विशेष ध्यान दिया, इत्यादि।

'बिलकुल स्पष्ट रूप से सबसे महत्त्वपूर्ण विभेदक हैं एक तरफ, एक 'प्रभावी शिक्षक व्यवस्था' जिसमें प्रधान शिक्षक और अन्य शिक्षकों की प्रतिबद्धता, अनुशासन और प्रयास हैं, तथा दूसरी तरफ एक 'भागीदारी-आधारित सामुदायिक व्यवस्था' जिसमें सक्रिय और मददगार एस.डी.एम.सी. और माता-पिता होते हैं।'

गैर-अकादमिक मानदण्डों से अकादमिक मानदण्डों[2] पर जाते हुए एल.जी.पी. ने ऐसी अन्तर्दृष्टियाँ प्रदान कीं जिनकी बहुत कम लोग बड़े पैमाने के आकलनों से अपेक्षा करते हैं। यद्यपि विभिन्न राज्यों में विद्यार्थी आकलनों में एक समान योग्यताओं को शामिल नहीं किया गया था, पर आकलनों में शामिल किए गए अध्ययन क्षेत्रों में जरूर कहीं-कहीं मेल था जिससे अखिल भारतीय स्तर पर विश्लेषण करने का मौका मिल पाया।

'लिखना' साफ तौर पर देश भर में विद्यार्थियों के बीच एक कमजोर क्षेत्र के रूप में सामने आया। भाषाओं में एक अन्य कमजोर[3] अध्ययन क्षेत्र है 'व्यावहारिक व्याकरण'। 'समझ आधारित पहलू' तीसरा क्षेत्र है जहाँ 'किसी गद्यांश की केन्द्रीय विषयवस्तु को समझना' या 'किसी वाक्य में शब्दों को क्रम से लगाना' जैसी योग्यताओं को कमजोर पाया गया। कुछ विशेष योग्यताएँ जिन्हें कमजोर पाया गया वे हैं, 'शिक्षकों द्वारा अपरिचित शब्द बोले जाने (डिक्टेशन) पर उन्हें लिखना', 'चित्रों के क्रम को समझकर उनसे कहानी बनाना', 'विराम चिन्हों का इस्तेमाल करते हुए निर्देशित रचना लिखना', 'वाक्य रचना के व्यावहारिक नियमों को जानना' और 'कालों (टेन्सेज) की समझ वाले वाक्य बनाना'।

गणित में, बच्चों का 'भिन्नों, दशमलवों और प्रतिशतों' वाला विषय क्षेत्र कमजोर है। 'रोजमर्रा के जीवन के प्रश्नों को हल करना' और 'मुद्रा, धारिता, द्रव्यमान, क्षेत्रफल और आयतन से जुड़े प्रश्न' एक अन्य कमजोर क्षेत्र है जिसमें निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण योग्यताओं, जैसे 'रुपए को पैसों में रूपान्तरित करना', 'बुनियादी गणनाओं द्वारा मुद्रा सम्बन्धी प्रश्नों को हल करना (पैसे से जुड़े सामान्य व्यावहारिक प्रश्न)', 'आयतन को मापना' और 'जी.सी.डी. व एल.सी.एम. की गणना करना' की पहचान कमजोर क्षेत्रों के रूप में की गई।

पर्यावरण विज्ञान के क्षेत्र में, 'पृथ्वी व आकाश पर होने वाली सामान्य घटनाओं का अवलोकन करके निष्कर्ष निकालना', मनुष्य और उसके पर्यावरण के बीच के स्थानीय और परस्पर प्रभाव डालने वाले सम्बन्धों को समझना और उनका अर्थ लगाना' तथा 'सामाजिक व प्राकृतिक परिवेश के सन्दर्भ में अपने कल्याण के बारे में जागरूकता होना', इनकी पहचान कमजोर अध्ययन क्षेत्रों के रूप में की जाती है। इन क्षेत्रों के अन्तर्गत कुछ खास योग्यताओं की पहचान कमजोरियों के रूप में की जाती है जैसे, 'मानचित्र को पढ़ने और दिशाओं की पहचान करने की क्षमता', 'मानचित्र पर अपने जिले, राज्य आदि को पहचानना', 'अपने एकदम नजदीकी परिवेश की जानकारी होना जैसे उस क्षेत्र में अपनाए जाने वाले विभिन्न पेशे', 'छोटे परिवारों की आवश्यकता, छोटे घरों में रहने वाले बड़े परिवारों की समस्याएँ, इत्यादि, जैसी सामाजिक-आर्थिक दशाओं की जानकारी होना'।

यद्यपि जिन 5 राज्यों में एल.जी.पी. को लागू किया गया था उनमें कई समानताएँ उभरकर आईं, पर उनके बीच अच्छी खासी भिन्नता भी उभरी है। राज्य विशेष के अनुसार सामने आने वाले ये अन्तर गहरी अन्तर्दृष्टियाँ प्रदान करते हैं, लेकिन इस लेख की शब्द सीमा को ध्यान में रखते हुए सिर्फ साझा प्रवृत्तियों को ही सामने रखा गया है।

इस बात के प्रमाण हैं कि बड़े पैमाने के आकलनों की 'दुनिया में' न सिर्फ अपनी उचित जगह है, बल्कि यदि उनकी ठीक से परिकल्पना की जाए और बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से लागू किया जाए तो वे हमेशा ही ऐसी जबरदस्त अन्तर्दृष्टियाँ प्रदान करेंगे जो न सिर्फ नीति बनाने के स्तर पर, बल्कि कक्षा में पढ़ाने के स्तर पर भी बेहद लाभकारी होंगी!

मैं इस लेख का समापन ऑस्ट्रेलिया की दिग्गज आकलन संस्था, ए.सी.ई.आर. (ऑस्ट्रेलियन काउंसिल फॉर ऐजुकेशनल रिसर्च) के प्रमुख ज्यॉफ मास्टर्स के उद्धरण

के साथ करूँगा, "यदि 21 वीं सदी के आकलनों को सभी विद्यार्थियों के बेहतर ढंग से सीखने और उनके बेहतर परिणामों के लिए योगदान देना है तो उनके दृष्टिकोण में बदलाव जरूरी है। आकलन के वक्त सीखने के किसी क्षेत्र में अपनी दीर्घकालिक प्रगति में विद्यार्थी कहाँ पर हैं इसे स्थापित करने और समझने के बुनियादी उद्देश्य को पूरा करने के हिसाब से ही आकलनों को रचा जाना चाहिए।" इसलिए, हमारी पद्धति में थोड़े बदलावों के साथ, सारे स्कूल स्तरीय विद्यार्थी आकलन, जो अनिवार्यत: बड़े पैमाने के होते हैं, कई स्तरों पर लाभकारी हो सकते हैं। एल.जी.पी. ने सफलतापूर्वक एक नमूना दर्शाया है।


मैत्रीपूर्ण मौखिक आकलन प्रक्रिया जारी है


हाथ से गणना और प्रश्नपत्र पर एक स्माइली


आकलन का उत्सव


आकलन का आनन्द उठाना


करीब आती परीक्षा के बावजूद खिलखिलाकर हँसते हुए बच्चे

1. नवम्बर 2002 में कर्नाटक में शुरू हुआ, लर्निंग गारण्टी प्रोग्राम (एल.जी.पी.) अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन का प्रमुख कार्यक्रम था; दो वर्ष से कुछ अधिक वक्त के भीतर यह कार्यक्रम मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और उत्तराखण्ड में भी फैल गया।

2. एल.जी.पी. के आकलन में ध्यान निचली प्राथमिक कक्षाओं पर दिया गया; इस लेख में किया गया अकादमिक पहलुओं का विश्लेषण कक्षाओं 3 व 4 पर आधारित है।

3., किसी योग्यता या विषय क्षेत्र को तब 'कमजोर' मान लिया जाता है अगर सारे राज्यों में आकलन से गुजरे तीन–चौथाई से भी अधिक विद्यार्थी वांछित योग्यता हासिल न कर पाए हों।

References:

Learning Guarantee programme Concept note 2002, Azim Premji Foundation

Learning Guarantee programme Concept note 2006, Azim Premji Foundation

History of the Foundation – A summary, Azim Premji Foundation

A comparative analysis of LGP in 5 states – A summary report, Azim Premji Foundation

How Classroom Assessments Improve Learning // Thomas R. Guskey; Education Leadership | February 2003 | Volume 60 | Number 5 Using Data to Improve Student Achievement Pages 6-11

Measuring progress, Geoff Masters, 30 May 2013, Australian Education Review number 57, Reforming Educational Assessment: Imperatives, principles and challenges (ACER Press 2013).

ऋषिकेश *वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी इंस्टीटयूट फॉर असेसमेंट एण्ड एक्रिडिटेशन के सदस्य हैं। पिछले 10 सालों में वे शैक्षणिक शोध, शिक्षक प्रशिक्षण, संस्थागत आकलनों को सिखाने व रचने जैसे कार्यों में शामिल रहे हैं, और इनमें से 8 साल उन्होंने इसी फाउण्डेशन में गुजारे हैं। उन्होंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से भारतीय इतिहास में एम. ए. किया है। वे बंगलौर में टाइम्स ऑफ इण्डिया के न्यूजपेपर इन ऐजुकेशन कार्यक्रम का हिस्सा रहे हैं, जिसके तहत उन्हें बंगलौर शहर के 100 से भी ज्यादा स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ मिलने–जुड़ने, बातें करने का मौका मिला। उनसे rishikesh@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद :*** *भरत त्रिपाठी*